IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उराँव जनजाति महिलाओं की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ

(झारखंड राज्य के गढ़वा जिले के विशेष सन्दर्भ में)

(With special reference to Garhwa District of Jharkhand State)

Dr. NAWALESH RAM

Head, Department of sociology, Degree College Mahagama, Godda, Jharkhand 814154

परिचय :- प्रत्येक समाज में चाहे जनजाति हो या गैर जनजाति समाज महिलाओं की परिस्थिति उस समाज विशेष में आरम्भ से प्रचलित, आदर्शो, विश्वासों, मान्यताओं और मूल्यों के आधार पर उन्हें सौंपे गए कार्यों के अनुसार निश्चित होती हैं। ये आदर्श, विश्वास, मूल्य और कार्य प्राय:प्रत्येक समाज में भिन्न-भिन्न प्रकृति के होते हैं, इसलिए विभिन्न समाजों में महिलाओं की संस्तरण की दिशा निम्न समाजों से उन्नत समाजों की ओर है या उसके विपरीत है। उराँव समाज की महिलाएं काफी मेहनती तथा कठिन परिश्रम करने वाली होती है। इन्हें गृह कार्य के अतिरिक्त खेतों, जंगलों, निर्माण कार्यों, ईट-भटठों, खदानों तथा कल कारखानों में कार्य करते देखा जा सकता है। इन महिलाओं के परिश्रम के बल पर ही पुरे परिवार का पालन-पोषण होता है तथा इन्हें अन्य जगहों पर अकुशल श्रमिक के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि ये महिलाएँ बिल्कुल अशिक्षित होती है जिस कारण इन्हें कुशल श्रमिक होने का मौका नहीं मिलता है।

कुंजी शब्द :- सामाजिक, आर्थिक , सांस्कृतिक, शैक्षणिक , और राजनीतिक

प्रस्तावना :-

भारतीय समाज में महिलाओं की परिस्थिति समय के साथ बदलती रही है। प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति अच्छी और मातृसत्ता थी। प्राचीन काल में उन्हें शिक्षा का पूर्ण अधिकार प्राप्त थी। महिलाओं के बिना कोई भी धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक कार्य पूर्ण नहीं मानी जाती थी। महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार था जिसमें वे अपनी इच्छा अनुसार पति का चुनाव कर सकती थी। समाज में महिलाओं को पूज्यनीय माना जाता था। लेकिन धीरे-धीरे भारतीय समाज में मातृसतात्मक व्यवस्था खत्म हो जाने के कारण पितृसत्तात्मक ने अपना स्थान बनाकर खुद की अधिकारों को आगे बढ़ाते गया। पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने महिलाओं से उनकी अधिकार छिनते गये जिससे महिलाओं को अनेक परिस्थितियों का सामना करना पड़ा जैसे – सती प्रथा, शिक्षा से दूरी, बाल-विवाह, पर्दा प्रथा आदि ।

छिल्लर (2010) में अपनी कृति '**भारतीय नारी शोषण के बदले आयाम**' अध्याय तीन में उन्होंने बताया कि नारी के परिस्थिति निम्न होने का मूल कारण नारी पर शोषण है जिसके कारण उसकी घरेलू सामाजिक आर्थिक परिस्थिति निम्न होती है। नारी पर सामाजिक हिंसा जैसे भ्रूण हत्या बाध्य करना, स्त्रियों से छेड़-छाड़, सम्पति में महिला को हिस्सा न देना, विधवा को सती होने के लिए बाध्य करना, पुत्र बधू को और दहेज़ लेने के लिए बाध्य करना इत्यादि मुख्य कारण हैं जिससे घरेलू महिला की सामाजिक आर्थिक राजनीतिक परिस्थिति नगण्य होती है। **सिंह** (2010) में अपनी कृति '**आधुनिकता और महिला उत्पीड़न**' अध्याय दो में उन्होंने बताया कि घरेलू महिलाओं की परिस्थिति या दशा निम्न होने का अन्य कारण हैं जिसका जिम्मेदार स्वयं समाज है। अपने ही देश की बात करें तो हर राज्य में महिला उत्पीडन की घटनाएँ बहुत तेजी से बढ़ रही हैं। कोई भी क्षेत्र, राज्य, वर्ग, समुदाय, धर्म ऐसा नहीं है जहाँ पर महिला को उत्पीड़न का शिकार नहीं होना पड़ता है। उत्पीड़न के कारण महिला स्वयं एक शर्मिंदगी पूर्ण जीवन यापन करती है। जो महिला अपने घर में जिस प्रकार का उत्पीड़न का सहन करती है वही उसकी परिस्थिति बन जाती है। **गाँधी** (2009) में अपनी कृति **'विवाह समस्या'** अनुक्रमांक 10 में उन्होंने बताया कि पतिधर्म भी महिला की दशा और दिशा बिगाड़ाने में महत्वपूर्ण कारक है। क्योंकि पति वर्ग महिलाओं को पत्नी धर्म का उपदेश देने के लिए सदैव तैयार रहता है। पत्नियों से यह कहा जाता है कि वे अपनी पति को ही मिल्कियत समझें। भारतीय समाज में पुरुष को पुरुष होने के नाते जो अधिकार अपने घर में जमीन, जायदात और पशु इत्यादि प्राप्त है ठीक उसी प्रकार का पत्नी को प्राप्त नहीं है। यही कारण है कि पति धर्म भी घरेलू स्त्रियों की सामजिक परिस्थिति नग्न होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। **राजकुमार** (2009) में अपनी कृति **'नारी शोषणःसमस्याएं एवं समाधान'** अध्याय नौ में उन्होंने बताया कि समस्याएं अधिकांश सामाजिक क्षेत्र में जन्म लेती है और उनका सम्बन्ध अधिकतर नारी जाति से होता है। विभिन्न समस्याओं और कुप्रथाओं ने नारी जाति को बड़ी हीनवस्था में पहुँचा दिया है जिसके कारण नारी की परिस्थिति निम्न होती है। पर्दा प्रथा के कारण नारी घर में वन्दनीय बना दी गई। दहेज़ की समस्या ने पुत्री जन्म को ही अप्रिय बना दिया है। यही सब कारण है कि घरेलू स्त्रियों कि सामाजिक परिस्थिति अत्यंत दयनीय होती है। घरेलू स्त्रियों कि परिस्थिति निम्न होने के कारण वैवाहिक समस्या, पारिवारिक समस्या, आर्थिक समस्या, विधवा समस्या, बाल विवाह की समस्या, दहेज़ की समस्या, शिक्षा की समस्या समाज में उत्पन्न हुई है। **जौहरी, एण्ड गुप्ता** (2000) में अपनी कृति **'महिला उत्पीडन'** अध्याय पांच में उन्होंने बताया कि भारत एक रूढ़ीवादी विचारधारा वाला देश है जिसमें अनेक मान्यताओं को अनिवार्य रूप से मानना पड़ता है। जिसका प्रभाव एक महिला पर पड़ता है और पुत्र और पुत्री में भेद किया जाता है। पुत्रियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है तथा पुत्र के लिए जबरजस्ती पढ़ने के लिए बाध्य किया जाता है। यदि वह पढ़ना न चाहे तो भी पढ़ने के लिए जोर दिया जाता है क्योंकि पुत्रियों की शिक्षा से माता-पिता को कोई सुविधा प्राप्त नहीं होती है। पुत्रियों की शिक्षा केवल चिट्ठी चपाठी पढ़ने तक ही दिया जाता है यही सारी रुढ़िवादी अवधारणाएं हमारे समाज में विद्यमान हैं जिसके कारण स्त्रियों की सामाजिक परिस्थिति अत्यंत दयनीय रहती है। **श्रीवास्तव** (2003) अपनी कृति **'महिलाओं के प्रति अपराध'** में अध्याय द्वितीय पृष्ठ चार में उन्होंने महिलाओं के प्रति सामाजिक परिस्थिति के बारे में बताया है कि अवयस्क बालिकाओं के प्रति जो अपराध होते हैं वे प्रायः उनकी अवयस्कता में उनसे विवाह या शारीरिक यातना के होते हैं। भारत के गांवों में प्रायः माता-पिता या संबंधी अवयस्क बालिकाओं का विवाह कर देते हैं। हिंदू और मुसलमानों में यह बहुत प्रचलित है। फलस्वरूप समय से पहले बाल माता बन जाती है जिसका भार उसके अवयस्क और अपूर्ण शरीर पर पड़ता है। अतः यह विवाह माता-पिता की सहमति से भी वर्जित है। यह एक कानूनी अपराध भी है। पुत्री का कम उम्र में विवाह करना एक निम्न सामाजिक परिस्थिति का घोतक है।

शहरी भारतीय समाज के लोगों को आदिवासी लोगों के प्रति उनके मानसिकता बहुत ही अपमानजनक है। उनको समझने के लिए बहुत अधिक ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। आदिवासियों लोगो को उन्हें आदिम, बर्बर, मुर्ख आदि माना जाता है। 1855-1856 के दौरान एक संथाल विद्रोह हुआ था और यह विद्रोह संथाल शासन को जन्म दिया, यही वह कारण है जहां से आदिवासी और शहरी समाज के बीच अंतर पैदा हुआ। शहरी आबादी वाले लोग उन्हें कभी भी समान अधिकार वाले इंसान नहीं मानते हैं। आदिवासी लोगो की गरीबी के कारण इनकी संस्कृति दिन प्रति-दिन खत्म होते जा रही है और इनकी पहचान भी खतरे में है **(Gupta, 2016)**। जनजाति लोग पहाड़ियों एवं जंगलों जैसे एकांत क्षेत्र में दुर्गम स्थान पर निवास करते हैं। इनका आजीविका कृषि पर आधारित है। इनका अर्थव्यवस्था अच्छी नहीं होने के कारण गरीबी बना रहता है तथा साक्षरता एवं स्वास्थ्य का स्तर भी निम्न रहता है। ये लोगो को अन्य संस्कृतियों वाले लोगों के साथ संपर्क बहुत कम होता है, क्योंकि यह लोग अक्सर अपने पिछड़ेपन के कारण दूसरों द्वारा अपेक्षित होते रहते हैं **(Grover &singhal, 2022)**। ग्रामीण जनजातीय महिलाओं की साक्षरता दर बहुत कम है तथा अन्य समाज के महिलाओं के साक्षरता दर के समतुल्य भी नहीं है। हालांकि आदिवासी महिलाओं की साक्षरता में पहले की अपेक्षा वृद्धि हुई है फिर भी यह साक्षरता महिलाओं के लिए राष्ट्रीय औसत से बहुत कम है। साक्षरता कम होने के वजह से यह महिलाएं की सरकारी सेवाएं में स्थिति निम्न है। अधिकांश महिलाएं खाद्य संग्रह, पशुपालन, हस्तशिल्प, वाणिज्य, औद्योगिक श्रम आदि जैसे व्यवसाय में संलग्न है **(Singh & Rajyalakshmi,1993)**। शिक्षा समाज के विकास के महत्वपूर्ण संकेतक है। आज के दुनिया में शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है चाहे व्यक्ति का वर्ग, जाति, लिंग या धार्मिक पहचान कुछ भी हो। शिक्षा महिलाओं के समुचित विकास को सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण साधन है, लेकिन शिक्षा प्राप्त करने में आदिवासी महिलाओं के सामने कई समस्या आती है जिसके कारण वे शिक्षा से वंजित रह जाती है **(Sahal, 2023)**।

साहित्य पुनरावलोकन:- झारखंड की विभिन्न योजनाएं आदिवासी आबादी को शिक्षा की बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने में असफल रही है। आदिवासी बच्चों अपनी गरीबी, शिक्षा के अभाव और अनेक कठिनाइयों के वजह दलदल के चक्र में फसते जा रहे हैं(**Sinha, & Tripathi, 2017**)। झारखंड में जनजाति मूल रूप से छोटा नागपुर का पठार और संथाल परगाना क्षेत्र में बसे हुए हैं। उरांव जनजाति कृषि संबंधी कार्य करते थे तथा चाय बागानों में मजदूरी का कार्य करते थे। जिससे उनको न्यूनतम आय प्राप्त होता था। उस आय से उनको अपना परिवार चलाने में बहुत समस्या करना पड़ता था(**Deb,2016**)। दुर्भाग्य से भारत में आदिवासी समाज के लोग अपनी पुजारा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। अपने प्राकृतिक वन आवासों से विस्थापित होने के कारण सामाजिक आर्थिक एवं गरीबी जैसे अनेक समस्या लगातार उनके बढ़ रहे हैं(**Beck & Mishara, 2010**)। समाज सुधारक, राजनेता और प्रशासन लोग जनजातीय समूह और दूसरे तरफ गैर जनजातीय समूह के बीच विशाल सामाजिक आर्थिक अंतर को अच्छी तरह से जानते हैं। सरकार के द्वारा जनजाति के कल्याण के लिए अनेक योजना और नीतियां बनाए गए हैं फिर भी उनकी स्थिति दयनीय है(**Purkayastha, 2015**)। जनजातीय समुदाय की सामाजिक आर्थिक संरचना गैर जनजातीय समुदाय से भिन्न है। वह विभिन्न प्रकार के व्यवसाय करते हैं। उससे जो आय प्राप्त होता है, उससे अपना जीवन का भरन-पोषण करते हैं। अधिकांश जनजातीय समुदाय एकांत क्षेत्र में निवास करते हैं, तथा अपनी संस्कृति विरासत को बचाए हुए हैं। उनकी अर्थव्यवस्था वनों पर आधारित होती है, फिर भी उनकी आर्थिक समस्या हमेशा लगा ही रहता है(**Singh, 2024**)। आदिवासी आजीविका के लिए मूलत अपने प्राकृतिक परिवेश पर निर्भर है। विस्थापन या भूमि का नुकसान उनके लिए विनाशकारी है। अनेक भूमिहीन आदिवासी अपना पेट नहीं भर पाते हैं, क्योंकि वह वर्षा आधारित कृषि पर निर्भर हैं(**Ghos, 2021**)। आदिवासी महिलाएं सामान्य रूप

से पुरुषों के समान आर्थिक विकास में योगदान करती है। यदि पुरुष शिकार करते हैं तब महिलाएं खाने योग्य फल-फूल, कंद मूल, लकड़ी और अन्य घरेलू कार्य करती है। उरांव जनजाति में महिलाएं कृषि के क्षेत्र में कटाई रोपाई जैसे अनेक कार्य करती है। फिर भी उन्हें न्यूनतम आय प्राप्त होता है ,जिससे वह अपनी परिवार का भरण पोषण करती है(**Binjha,2020**)। आरंभ में जनजातीय समुदाय अपने जीवन यापन के लिए शिकार करना, मछली पकड़ना भोजन एकत्र करना जैसे अनेक कार्य करती थी। लेकिन हाल ही में अब यह लोग स्थाई कृषि कार्यों एवं चाय बागानों में मजदूरी करने लगे हैं। जनजाति समुदाय के कुछ आर्थिक स्थिति में काफी हद तक सुधार हुआ है लेकिन कुछ जनजाति अभी भी दैनिए स्थिति में जी रहे हैं(**Ali & Basak, 2018**)। स्वतंत्रता के बाद आदिवासी समुदाय के लोगों को संरक्षण और विकास का प्रावधान है। किंतु उनके पुराने रीति-रिवाज और उनके जीवन शैली काफी खतरे में पढ़ चुका है। पहले आदिवासी पोषण से लेकर ईंधन तक जंगलों पर निर्भर रहते थे, लेकिन अब वैसा स्थिति नहीं है। भारत की लगभग 10 प्रतिशत आबादी बनवासी है, और उसमें से 70 प्रतिशत से अधिक अनुसूचित जनजातियां हैं। इनमें से भी अधिकांश लोग गरीब, अशिक्षित और बाहरी दुनिया से अनभिज्ञ है(**Jana, 2020**)।

शोध अंतराल :-

झारखंड एक आदिवासी बहुल राज्य है। यहां जनजातीय समुदाय की प्रधानता है। राजनीतिक क्षेत्र मे भी इस समुदाय प्रबलता है, लेकिन उरांव समाज की महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक, आदि के आधार पर काफी पिछड़ी हुई है। उरांव समाज की महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति पर अध्ययन बहुत कम हुआ है। इसलिए उरांव समाज की महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति जानने के लिए यह अध्ययन बहुत जरूरी है। ताकि उनकी समस्या को उजागर किया जा सके।

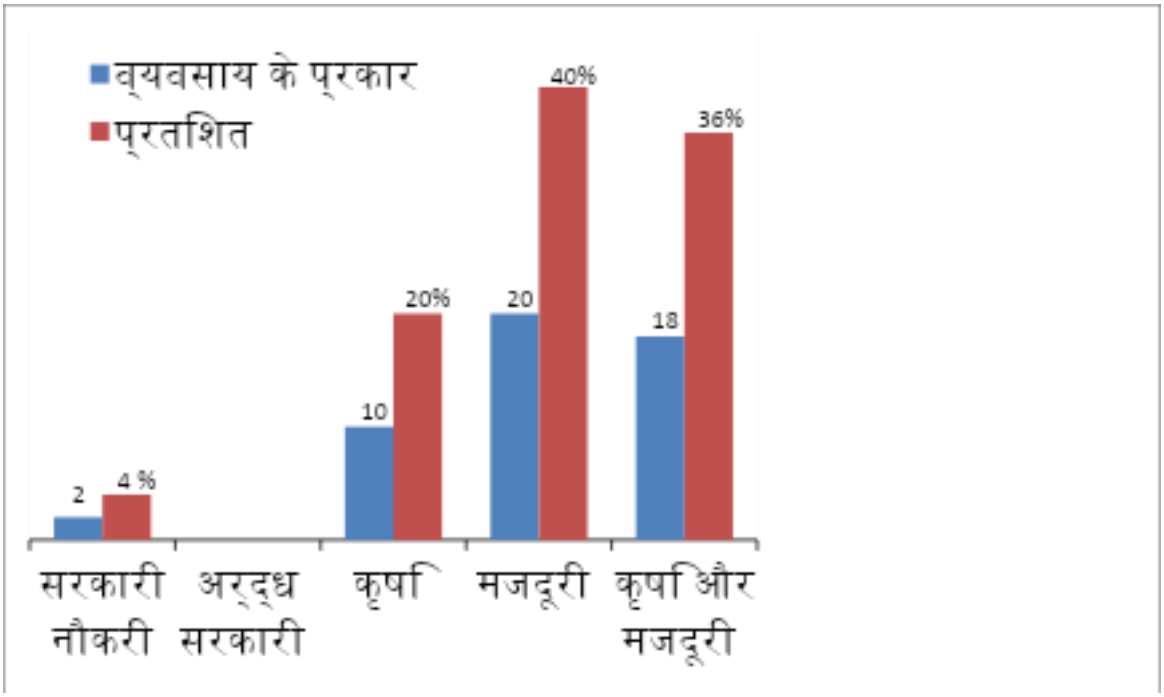
झारखण्ड राज्य के गढ़वा जिला के सुंडी पंचायत परसवान गाँव के उराँव जनजातीय समाज में भी अपने प्रचलित आदर्शो,विश्वासों,मान्यताओं और मूल्य के आधार पर महिलाओं की कार्य और परिस्थिति निश्चित की गयी है। क्योंकि इस समाज में पितृसतात्मक पारिवारिक संरचना के अंतर्गत आर्थिक क्रियाकलाप में पुरुष के समकक्ष रहनेवाली जनजातीय महिलाएँ अपने ही मेहनत से अर्जित आर्थिक उपलब्धियों का उपयोग पुरुष के समान नहीं कर पाती है। इनका दैनिक जीवन सभ्य समाज की महिलाओं से बिल्कुल अलग है, क्योंकि ये महिलाएँ सामान्य तौर पर एक कार्यशील महिलाएं है। इनके पूरे परिवार का जीवन निर्वाह मेहनतकश मजदूरी के माध्यम से ही होता है। अपने परिवार में सबसे मेहनत और मजदूरी का कार्य महिला ही करती हैं,लेकिन परिवार एवं जनजातीय समाज में पुरुष की अपेक्षा महिला की परिस्थितियों निम्न होती है। वस्तुतः परसवान गाँव कि जनजातीय समाज में महिलाएँ आर्थिक गतिविधियों के मामलों में पुरुषो की केवल सहयोगी ही नहीं होती बल्कि पूरे घर का संचालन वह स्वयं करती है। इन जनजाति समाज में महिलाएँ जो कुछ प्राप्त करती हैं वह उनके कठिन परिश्रम तथा सहनशीलता का ही पुरुस्कार होता है। उराँव जनजाति में आर्थिक प्रतिबंधित प्रथा तो नहीं पाया जाता है लेकिन महिला या पुरुष अपने कार्य को स्वच्छ पूर्वक वह नहीं बदल सकती है जैसे – महिला की गृहस्थी को चलाना या खेत जोतना आदि। इस प्रकार इस समाज या परिवार में महिलाएँ परिश्रम करने वाली दासी ही समझी जाती है और उसे मात्र अबला के शिवाय कुछ नहीं समझा जाता है। कन्या जब अविवाहित होती है तब तक वह अपने पिता की संपत्ति समझी जाती है और जब उसका विवाह हो जाता है तब वह पूर्ण रूप से पति की संपत्ति समझी जाती है तथा पति के राय- मशविदा के अनुसार ही उनको पूरी जिंदगी गुजारनी पड़ती है।

परम्परागत जनजाति पंचायत व्यवस्था के अंतगर्त महिलाएँ ग्राम पंचायत की सदस्यता नहीं ग्रहण कर सकती है और न ही वह पंचायत की बैठक में भाग ले सकती है। समाज के लिए वह अपनी विचार पूर्वक सामाजिक चेतना को नहीं जगा सकती हैं क्योंकि उनको पंचायत में सदस्य के तौर पर बोलने का अवसर नहीं दिया जाता है। किन्तु पंचायत के समय निर्दोष रहित महिला को पंचायत के समक्ष अति आवश्यक समझे जाने पर ही उन्हें अपना सिर्फ तर्क देने का अवसर प्रदान किया जाता है। उराँव जनजाति समाज पितृसत्तात्मक समाज होने के कारण यह समाज भी दहेज़ से अछूता नहीं है। क्योंकि अन्य जनजाति समाज में विवाह संबंधित कुछ क्रय प्रथा पाया जाता है लेकिन उराँव समाज में दहेज़ प्रथा पाया जाता है। कन्या के विवाह के समय वर पक्ष को दहेज़ के रूप में कपड़े, पैसा ,अनाज आदि दिया जाता है। उराँव जनजाति के लोग समान गोत्रों से विवाह नहीं करते है। क्योंकि इनमें खून की अशुद्धता मानी जाती है तथा ऐसा विवाह करना इस समाज में निषेध है।

उराँव समाज की महिलाओं का परिस्थिति को निम्न आधारों से देखा जा सकता

1 **आर्थिक आधार पर महिलाओं की परिस्थिति** - उराँव समाज की महिलाओं की स्थिति को देखा जाये तो वहा आर्थिक क्षेत्र में बड़ी संख्या में शोषण का शिकार हो जाती है। महिलाएँ श्रम के द्वारा जो आय अर्जित करती है। वह आय उनकी हाथ नहीं लगती है क्योंकि उनके पति उस पैसो का मालिक हो जाता है। महिलाओं के लिए सबसे बड़ी समस्या यह है कि इनको प्रतिदिन गैर-मजदूरी का कार्य नहीं मिलता हैं इनको अपना समय घर पर ही व्यतीत करना पड़ता है। इस समाज में महिलाएं आर्थिक व्यवस्था की आधार है क्योंकि महिलाएं ही अपने परिवार के लिए मेहनत मजदूरी का कार्य करती है तथा आर्थिक आधार पर दो तरह की समस्या उठाती है क्योंकि उनकी कमाई धनराशि उनके हाथ नहीं लगती है उस पैसो का मालिक खुद उनका पति हो जाता है। पैसा नहीं देने पर उस महिला के साथ घर में मार-पीट भी शुरू हो जाती है और महिला पैसा खर्च कर देती है तो उस पैसों का हिसाब भी देना पड़ता है। आर्थिक दृष्टी से इस समाज की महिलाएं बहुत ही कमजोर होती है और अपनने परिवार में मातृत्व की भूमिका भी निभाती है जिसके कारण अपने परिवार के लिए कुछ खास दायित्व नहीं निभा पाती है जैसे – बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाना या बच्चे के प्रयोजन के लिए राशि जमा करना इत्यादि। महिला घर से लेकर बाहर तक पूरी दायित्व निभाती है और दोहरे समस्या का सामना करती है पहला बाहरी कार्य, व्यवसाय, मजदूरी सम्बन्धी, अन्य समस्याओं की सामना करती है दूसरा अपने परिवार से संबंधित समस्या।

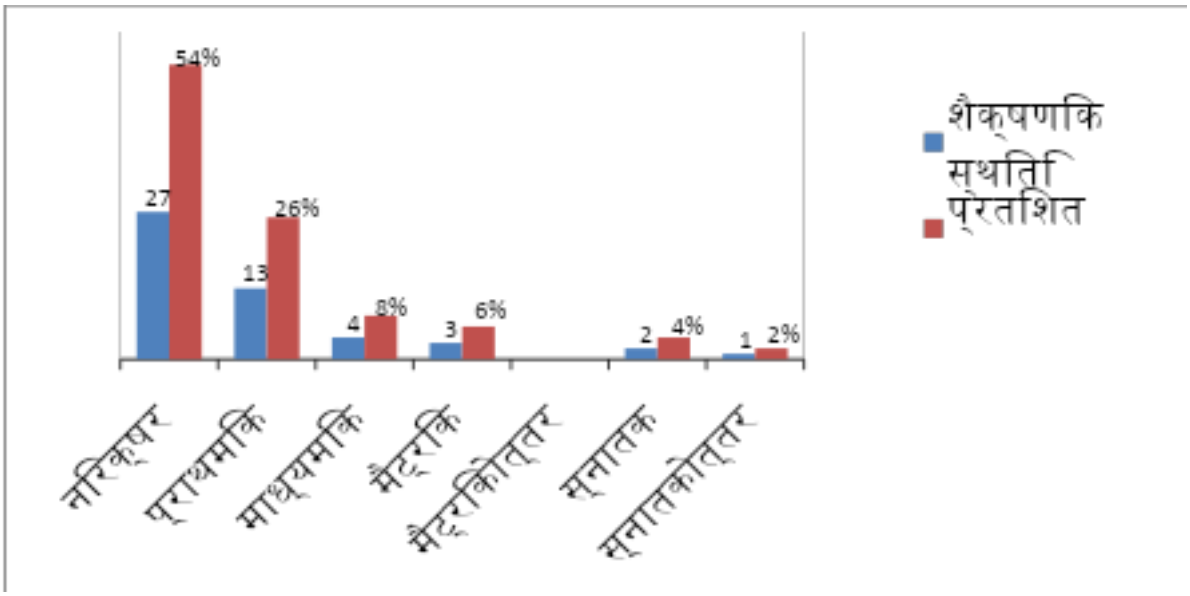
उराँव जनजाति महिलाओं की आर्थिक स्थिति



उपरोक्त ग्राफ में महिला सूचनादाताओं की आर्थिक स्थिति को व्यवसाय के आधार परदर्शाया गया है। सबसे अधिकतम 40 प्रतिशत महिलाएँ मजदूरी तथा न्यूनतम 4 प्रतिशत महिलाएँ सरकारी नौकरी करती है। 20 प्रतिशत महिलाएँ कृषि और 36 प्रतिशत महिलाएँ कृषि मजदूरी दोनों करती है।

2 **शैक्षिणिक आधार पर महिलाओं की पारिस्थिति** - उराँव समाज में महिलाओं की शिक्षा को उतना स्थान नहीं दिया गया है जितना उसे दिया जाना चाहिए। इस कारण उराँव समाज में महिलाओं की शिक्षा बिल्कुल निम्न स्तर पर है। इस समाज में शिक्षा का अभाव महिलाओं में सदैव पाया गया है। भारत के 28 राज्यों में झारखण्ड ही एक ऐसा राज्य है जहाँ कि जनजातीय महिलाओं की शिक्षा काफी निम्न स्तर है। झारखंड राज्य की कुल साक्षरता दर 2011 के अनुसार 66 .04 प्रतिशत है जिसमें अध्ययनित जिला गढ़वा का कुल साक्षरता दर 60.33 प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता दर 72.19 प्रतिशत और महिला साक्षरता दर 55 .04 प्रतिशत है। देश में न्यूनतम साक्षरता दर वाले स्थान पर झारखंड तीसरा राज्य है। लेकिन उराँव समाज की महिलाएं शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ी हुई है जिसके कारण इन महिलाओं की सामाजिक संरचना में कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं हो सका है। शिक्षा संस्थाओं में इनका अपर्याप्त नामांकन है और ये निर्धन लोग है जिसके कारण बड़े हो रहे बच्चों और बच्चियों को रोज- रोटी के लिए मजदूरी के कार्य में लगा दिया जाता है और यह बच्ची अपनी परिवार की आमदनी का स्त्रोत बन जाती है जिसके कारण इनकी शैक्षिणिक स्थिति निम्न होती है। यदि बच्ची के माता पिता किसी कारण वश सरकारी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए बच्ची की दाखिला भी कराती है तो आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण उनकी शिक्षा अधिकांश प्राथमिक स्तर तक ही सीमित हो जाती है। प्राप्त आंकड़ो आधार पर स्पष्ट है कि अधिकांश बच्चें आर्थिक व्यवस्था कमजोर होने के कारण निरक्षर हैं या उच्च शिक्षा से वंचित हैं।

उराँव जनजाति महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति



उपरोक्त ग्राफ में महिला सूचनादाताओं की शैक्षणिक स्थिति को दर्शाया गया है। जिसमें सबसे अधिकतम 54 प्रतिशत महिलाएँ निरक्षर तथा न्यूनतम 2 प्रतिशत महिलाएँ स्नातकोत्तर की पढाई किये है। 26 प्रतिशत महिलाएँ प्राथमिक, 8 प्रतिशत माध्यमिक 6 प्रतिशत मैट्रिक और 4 प्रतिशत महिलाएँ स्नातक पढाई किये हुए पाए गए है।

3 **उराँव समाज की संस्कृति** -प्रत्येक समाज की अपनी एक अलग एवं विशिष्ट संस्कृति होती है। उराँव समाज की संस्कृति गैर समाज की संस्कृति से बिल्कुल भिन्न है। संस्कृति मानव समाज की एक अनुपम घटना मानी जाती है क्योकि संस्कृति के माध्यम से ही मानव समाज ने प्राकृतिक रहस्यों को जाना पहचाना है। उराँव समाज के लोग अपनी परम्परा, संस्कारो, व्यवहारों, विचारो, नियम, विवाह, भाषा, रहन-सहन, खान-पान, नृत्य, वेशभूषा आदि को एक संस्कृति के रूप में अनुकरण करते आयें हैं। उराँव समाज के लोग संस्कृति को समाज एवं पूर्वज की आत्मा के रूप में देखते हैं क्योकि इसी के आधार पर सामाजिक जीवन एवं क्रिया कलाप को ये लोग पहचानते है और ये क्रिया–कलाप ही इनको जीवन की नींव डालते है जिनके आधार पर इनका परिवार और समाज निर्मित होता है।

जन्म से लेकर मृत्यु तक उराँव समाज की महिला एक सांस्कृतिक परम्परा के सूत्रों में बंधी रहती है। प्रारम्भ से ही इस समाज की महिलाएं अनजाने तौर पर सांस्कृतिक आचरण में बँध जाती हैं। चाहे वह गोदना हो, या शादी-विवाह की रस्में हों या मृतकों का संस्कार या करमा का त्योहार- इन सबके साथ उराँव समाज की महिलाओं का सांस्कृतिक संबंध अटूट है। उराँव समाज ईश्वर के प्रति आस्थावान और सजग होता है इनके लिए पितरों के विशिष्ट स्थान और मान होने के कारण उराँव समाज की महिलाओं को आचरण का मापक, उनके दस्तूर और परम्परा से जाना जाता है। और यह समाज ही संस्कृति के खुद संरक्षक होते हैं। तथा इनकी संस्कृति के अंतर्गत अन्य तथ्यों पर विचार किया जा सकता है।

शोध के उद्देश्य :-

उराँव सामाज की महिलओं की विभिन्न परिस्थितियों को समझना

आँकड़ों के संकलन की विधि :-

तथ्यों का संकलन गुणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग करते हुए व्यक्तिगत साक्षात्कार और अर्ध सहभागी अवलोकन के माध्यम से किया गया है। झारखंड राज्य के गढ़वा जिला खंड खरौंधी पंचायत सुंडी टोला परसवान गाव की उद्देश्यपूर्ण निदर्शन (purposive sampling) द्वारा 80 महिलाओं कि सामजिक परिस्थिति के अध्ययन हेतु मैंने साक्षात्कारनुसूची(interview schedule) के माध्यम से औपचारिक साक्षात्कार द्वारा तथ्यों का संकलन किया है। गुणात्मक व मात्रात्मक पद्धतियाँ-प्रत्येक विषय की अपनी अध्ययन पद्धति होती है जिसके तहत अपनी विषय की व्यापकता बढ़ाई जाती है। यह विषय की मूल पद्धति होती है जिसका रूप बदला नहीं जा सकता । वर्तमान अध्ययन में गुणात्मक व मात्रात्मक पद्धतियों उपयोग किया गया है। गुणात्मक पद्धति में उराँव जनजातियों के घरेलू महिलाओं की प्रस्थिति, सामाजिक – सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं उनके अन्य पक्षों का अध्ययन किया गया है। जबकि मात्रात्मक पद्धति में उनके आर्थिक स्थिति, अध्ययन किया गया है।

विश्लेषण :-

उराँव समाज की महिलाएं सुबह से लेकर शाम तक अन्य कार्यों का संपादन करती है। जिसमें महिलाएं बहुत जोखिम उठाती है। महिलाओं का जीवन सुबह से लेकर शाम तक श्रम कार्य में ही बीतता है। महिलाएं उत्पादन के क्षेत्र में भी काफी सक्रिय भूमिका निभाती है। बड़े किसानों द्वारा फसल की बुआई निराई व कटाई अधिकांश कार्य महिला द्वारा ही किया जाता है। उराँव जनजाति के लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे है जो भूमिहीन भी है। जिस कारण ये लोग फसल नहीं उगाते है और ये सभी लोग अर्द्धप्रवासी के रूप में फसल कटाई - बुआई के लिए किसी दुसरे राज्य में जाते है। इस कार्य के अलावा भी महिलाएं अन्य भी कार्य करती है जिससे उनको आय प्राप्त होती है, यद्यपि महिला का घर से लेकर बाहर तक के कार्य करने में उनकी जीवन बीतता है क्योंकि महिला अपने घर से करीब तीन से चार किलोमीटर की दूरी पर कार्य करने के लिए जाती है। जैसे गिट्टी तोड़ने का कार्य, खदान से गाड़ी पर पत्थर भरने का कार्य, ट्रैक्टर पर रेजा का कार्य और अपने गाँव के घरों में निजी मजदूरी का कार्य इत्यादि।

शोध का महत्व :-

देश के वास्तविक विकास के लिए जरुरी है कि परिवार एवं समाज के केन्द्रीय धुरी को संरक्षित किया जाए तथा महिलाओं की बिगड़ती परिस्थिति को संरक्षित एवं सुरक्षित किया जाए। महिलाओं पर सभी प्रकार के प्रताड़ना एवं शोषण पर पुनः रोक लगाया जाए इसके लिए विशेष सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा को ध्यान में रखा जाए। मानवशास्त्रीय मार्गन का मानना है कि मानव तभी सभ्य होगा जब महिलायें सभ्य होंगी अन्यथा समाज की मुख्य धारा से जब महिलाएं पिछड़ेंगी तो आने वाले हमारी पीढ़ी भी समाज की गर्त अवस्था में चलती जाएगी।

निष्कर्ष:-

प्राप्त आकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक समाज में महिलाओं की स्थिति उस समाज में प्रचलित आदर्श, विश्वास, मान्यताओं और मूल्यों के आधार पर उन्हें सौपे गए कार्यों के अनुसार निश्चित होती है। परसवान गाँव की उराँव जनजाति की सभी महिलाओं को समाज में प्रचलित विश्वास, व्यवहार, मान्यताओं, आदर्शों, नियमों इत्यादि के आधार पर ही स्थिति प्राप्त हैं। इस समाज में पारिवारिक संरचना के अंतगर्त आर्थिक क्रिया-कलापों में पुरुष से कहीं ज्यादा महिला मेहनत मजदूरी करके अर्जित उपलब्धियों को भी अपनी इच्छा अनुसार उपभोग नहीं कर पाती हैं। गैर जनजातीय समाज में महिलाओं के स्वतंत्रता की तुलना में उराँव समाज के महिलाओं की स्थिति में यह स्वतंत्रता देखने को नहीं मिलती है। यही कारण है कि इस समाज की महिलाओं की पारिवारिक स्थिति भिन्न हैं। इस समाज की महिलायें काफ़ी मेहनती, कठिन परिश्रम करने वाली होती हैं, तथा महिलाएं गृह कार्य के अलावा खेतों, जंगलों, भवन निर्माण कार्यों, ईट भट्टा, खदानों, सड़क निर्माण आदि कार्यों में देखा जा सकता है। इस प्रकार महिलाएँ अधिक परिश्रमी होने के बावजूद भी समाज में परम्पराओं से प्रचलित आदर्श मान्यमूल्यों और विश्वास के कारण वह धार्मिक, सामाजिक, राजनीति और पारिवारिक आधार पर प्रधान नहीं होती है।

संदर्भ सूची :-

- डॉ. जौहरीडॉ, गुप्ता. & सुभाषचन्द्र. (2009) 'महिला उत्पीड़न'. अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 4831/ प्रहलाद स्ट्रीट,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली
- डॉ. राजकुमार, (2009). 'नारी शोषण:समस्याएं एवं समाधान' अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 4831/24, प्रहलाद स्ट्रीट,अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली
- श्रीवास्तव, सुधा,. रानी. (2003) 'महिलाओं के प्रति अपराध' कामनवेल्थ पब्लिशर्स.4831/ 24 प्रहलाद स्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली
- डा. छिल्लर, मंजुलता. (2010). 'भारतीय नारी शोषण बदलते आयाम' अर्जुन पब्लिशिंग हाउस.4831 /24. प्रह्लाद गली .अंसारी रोड दरियागंज
- सिंह, निशांत,. मीनाक्षी. (2010). 'आधुनिकता और महिला उत्पीडन' : ओमेगा पब्लिकेशन्स. 4378/4B .G-4 जे .ऍम डी हॉउस सुरारी लाल अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली
- गाँधी, महात्मा. (2010). 'विवाह समस्या अर्थात स्त्री जीवन':आरोग्य निधी प्रकाशन. सी8 माकन. 174 यमुना बिहार दिल्ली
- Ali, E. & Basak, A. (2018). Socio Economic Condition of Oraon Tribe in Garal Bari Gram Panchayat of Jalpaiguri District, West Bengal. IJRAR- International Journal of Research and Analytical Reviews. 5 (1). 2137-2138. Retrievedfrom file:///C:/Users/hp/Downloads/SocioEconomicConditionofOraonTribeinGaralBariGramPanchayatofJalpaiguriDistrictWestBengal%20(4).pdf

- Beck, P. & Mishara, B., K. (2010). Socio-Economic Profile and Quality of Life of Selected Oraon Tribal Living in and Around Sambalpur Town, Orissa. Current Research Journal of Social Sciences. 2 (6). 340-341. Retrieved from https://maxwellsci.com/print/crjss/v2-340-349.pdf
- Binjha, P. (2020). Socio-economic status of tribal women of Jharkhand. International Journal of Applied Research. 6 (11). 32-35. Retrieved from https://www.allresearchjournal.com/archives/2020/vol6issue11/PartA/6-10-409-842.pdf
- Deb, P. (2016). Tribal Economy and Change: A Special Focus on Oraon, Munda and Santal Tribes in Jalpaiguri District, West Bengal. Salesian Journal of Humanities & Social Sciences. VII (2). 37-40. DOI: 10.51818/SJHSS.07.2016.37-50
- Ghosh, E. (2021). Impact of Industry Led Displacement on Indigenous People: A Case Study of the Oraon Tribe Of India. International Journal of Humanities and Social Science Invention. 10 (8). 29-30. DOI: 10.35629/7722-1008032940
- Gupta, p. (2016). Status of Tribal Women In india:some Observations. Anudhyan : An International Journal of Social Sciences, 1 (1). Retrieved from https://rnlkwc.ac.in/pdf/anudhyan/volume1/Status-of-Tribal-
- Grover,m. & Singhal, K. (2022). Status of Tribal Women In India. *Anusandhan The Research Repository of BIBS*.5 (1). Rertieved from https://gitarattan.edu.in/wp-content/uploads/2023/04/18.pdf
- Jana, S. (2020). A Study on the Socio- Economic Impact of Deforestation upon the Tribal Villagers in Galudih, East Singhbhum, Jharkhand. International Journal of Trend in Scientific Research and Development. 4 (2). 818-821. Retrieved from https://www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd29356.pdf
- Purkayastha, N. (2015). Tribal Development Policies after Independence: A Study on Oraon Tribe in Barak Valley Region of Assam. International Journal in Management and Social Science. 3 (7). 201-204. Retrieved from https://ijmr.net.in/current/zM4cV75TORNS4IE.pdf
- Singh, A., k & Rajyalakshmi, C. (1993). Status of Tribal Women In India. Social Change. Indian Journal of Life long Learning and Development. 23(4). Retrieved from http://www.womenstudies.in/elib/tribals/st_status_of_tribal.pdf
- Sahal, K. (2023). Status and Main Issues of Tribal women In India. Annals of Anthropological Research & Reviews Sidu-Knho-Birsa University. 3(1). Retrieved from https://journal.skbu.ac.in/published/paper_full_text/170321710834614.pdf?v=1728738292
- Sinha, P., S. & Tripathi, J., P. (2017). Scheduled Tribes Socio-economic Status in Jharkhand. IOSR Journal of Research & Method in Education.7 (4). 47-50. Retrieved from https://www.iosrjournals.org/iosr-jrme/papers/Vol-7%20Issue-4/Version-4/I0704044753.pdf
- Singh, S. (2024). An Overview of Socio-Economic Issues and Challenges of Tribal Development in India. An International open access, peer Reviewd, Multidisciplinary online journal. 2 (1).56-59. Retrieved from https://research-communications.cmpcollege.ac.in/wp-content/uploads/2024/07/8-Shivangi-Singh-Pg-55-61.pdf